बाल-कथा कहानी

नवाँ भाग

लेखक

रामनरेश त्रिपाठी

प्रकाशक

हिन्दी-मन्दिर, प्रयाग

पहला संस्करण
२०००

पौष, १९८७

दाम छ

Printed by K. P. D r at the Allahabad Law Jour l Press Allahabad
Publ shed by Pt Ram Naresh Tr p thi H di Mand Prayag

सूची

बाल-कथा कहानी

नवाँ भाग

गड़बड़गुम की कहानी

एक गाँव में एक किसान रहता था। उसके एक लडकी थी। वह बडी ही सुन्दर थी। सुन्दर लडकियाँ चतुर होती ही हैं। उसके बाप को बडा घमड था कि उसकी लडकी बडी होशियार है। एक दिन उसने राजा से कहा—मेरी लडकी ऐसी होशियार है कि घास में से सोने का सूत निकाल सकती है।

राजा बडा लोभी था। उसने उसी समय लडकी को

भेजा और उसे एक कोठरी में बन्द कर दिया, जिसमें घास के गट्ठर के गट्ठर भरे थे। उसे एक चरखा भी दे दिया गया। राजा ने लड़की से कहा—घास को कातकर आज रात भर में सोने के तार कर दो। नहीं तो सवेरा होते ही तुम मार डाली जाओगी।

लड़की बेचारी को चरखा ही कातना नहीं आता था, घास से सोने के तार निकालना तो असम्भव ही था। राजा ने कोठरी में ताला लगवा दिया। लड़की बेचारी बैठकर रोने लगी।

थोड़ी देर बाद कोठरी का द्वार आप से आप खुल गया और एक बौना भीतर घुस आया। उसे देखकर लड़की बहुत डरी। बौने ने कहा—डरो मत। मुझे बताओ, तुम क्यों रो रही हो?

लड़की ने कहा—मुझे इस घास से सोने के तार कातने पड़ेंगे। मै कातना नहीं जानती।

बौने ने कहा—मैं कात दूँ, तो क्या दोगी?

लड़की ने कहा—हाथ के कड़े।

बौने ने उसी वक्त घास से सोने के तार कात दिये। लड़की बड़ी खुश हुई। उसने उसे कड़े दे दिये।

दूसरे दिन राजा आया। सोने के सूत देखकर वह बहुत ही खुश हुआ। उसने दूसरे दिन भी उसे वही काम सौंपा। लड़की

फिर रोने लगी। बौना फिर प्रकट हुआ। उसने कहा—अब की बार मुझे क्या दोगी ?

लडकी ने कहा—अँगूठी।

बौने ने उसका काम झटपट कर दिया और अँगूठी लेकर वह गायब हो गया।

सवेरे राजा आया। सोने के सूत का बंडल देखकर वह मारे खुशी के नाचने लगा। उसने लडकी को एक बडे कमरे मे ले जाकर कैद कर दिया और घास के बडे-बडे गट्ठर उसके आसपास रखवा दिये और कहा कि इनको रात भर मे तुम सोने का कर डालोगी तो मैं तुमको अपनी रानी बनाऊँगा।

लडकी अकेली होते ही फिर रोने लगी। बौना फिर आया और बोला—अच्छा, तीसरी बार मै तुम्हारी मदद करूँ तो क्या दोगी ?

लडकी ने कहा—मेरे पास तो अब कुछ नहीं है।

बौने ने कहा—अच्छा, वादा करो कि तुम्हारा जो पहला बच्चा हो, वह मुझे दोगी।

लडकी ने वादा कर लिया। बौने ने उसका काम कर दिया। सवेरे राजा आया और वादे के अनुसार उसने किसान की लडकी को अपनी रानी बनाया।

जब रानी के बच्चा पैदा हुआ तब वह बहुत ख़ुश हुई। वह बौने को और उसके साथ किये हुए वादे को बिल्कुल ही भूल गई। एक दिन बौना उसके कमरे में अचानक आ पहुँचा।



एक दिन बौना उसके कमरे में अचानक आ पहुँचा

उसे देखकर रानी घबरा गई। उसने कहा—मेरा कुल ख़ज़ाना ले लो। पर मेरे बच्चे को छोड़ दो।

वह रोने लगी। बौने का दिल कुछ पसीज आया। उसने कहा—अच्छा, तीन दिन के अन्दर तुम मेरा नाम बता दोगी तो मैं तुम्हारे बच्चे को तुम्हारे ही पास रहने दूँगा।

बौना चला गया। रानी सारी रात जागती रही। उसने बहुत सोचा, पर बौने का नाम उसने कभी पूछा ही नहीं था, उसे याद क्या आता ? उसने चारोंओर आदमी दौडाये। पर उस बौने का पता न चला।

अगले दिन बौना फिर आया। रानी ने कई नाम लिये—बागडबिल्ला, टोडरमल, टिम्बकटू, चरखचूँ।

बौने ने सिर हिलाकर कहा—नहीं।

दूसरे दिन रानी ने और नाम बताये—बितानू, अल्हड-बिल्हड़, टिम्बरटच, टेढ़ीटॉग, कूबरकिंग।

पर बौना महाशय ने कहा—नहीं।

तीसरे दिन वह दोपहर को आया। उसी दिन सबेरे ही रानी के एक नौकर ने आकर कहा—कल मैं उस जंगल में गया था, जहाँ एक पहाड़ी टीला है। उसके पास एक छोटा सा झोपडा है। उसके पास एक अजीब शकल सूरत का एक बौना एक पैर से नाच रहा था और डमरू बजाकर यह गा रहा था—

राजा नाचे थिन्नक थिन्नक।
बाजा बाजे झम्मक झम्मक॥



तोता एक पर से नाच रहा है

खूब सजी है रानी मेरी ।
जैसे फूली है झरबेरी ॥
रानी मेरी पकड़ेगी दुम ।
गड़बड़गुम भई गड़बड़गुम ॥
गड़ बड़ गुम—गड़ बड़ गुम ।
मैं हूँ राजा—उल्लू तुम ॥

रानी यह सुनते ही खुशी के मारे उछल पड़ी । जैसे ही

सिंह और चूहे की कहानी

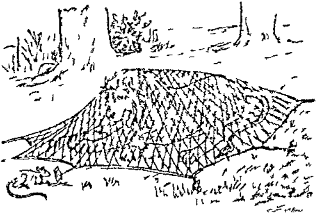
एक सिंह एक बार जंगल में पड़ा सो रहा था। उसके पास एक छोटे चूहे का बिल था। चूहा अपने बिल में से निकलकर सिंह की देह पर चढ़ गया और उछलने-कूदने लगा। सिंह जाग उठा। उसने क्रोध में आकर चूहे को अपने पंजों से पकड़ लिया और मारना चाहा।

चूहे ने हाथ जोड़कर और गिड़गिड़ाकर कहा—आप मुझे मत मारिये। मैं एक छोटा-सा चूहा हूँ। भला, मैं आप को क्या हानि पहुँचा सकता हूँ। आप मुझे छोड़ देंगे तो मैं आप की भलाई करूँगा।

चूहे की बात सुनकर सिंह खिलखिलाकर हँसने लगा और बोला—तू छोटा-सा चूहा मेरी क्या भलाई करेगा?

उसने चूहे को छोड दिया । चूहा भागकर अपने बिल में चला गया ।

कुछ दिन पीछे शिकारियों ने जङ्गल मे जाल फैलाया । सिंह उस जाल में ऐसा फॅस गया कि निकल न सकता था । थोडी ही देर पीछे शिकारी आते और सिंह को पकड़कर मार



चूहा बिल में से निकला

डालते । चूहे का बिल वहाँ से दूर नहीं था । ... में से निकला । सिंह को जाल में ... पास दौडा गया और अपने तेज़ ... काट दिया ।

जाल कट जाने पर जब ... तब चूहा उसके सामने हाथ ...

के राजा। मैं वही छोटा-सा चूहा हूँ जिसे आपने एक बार पकड़ कर छोड़ दिया था।

शिकारी दौड़े चले आ रहे थे। उनको देखकर सिंह यह कहते हुए भागा—ठीक है, मैं समझ गया कि जरूरत पड़ने पर छोटी चीज से भी बड़ा काम निकल सकता है।

होशियार लड़के की कहानी

एक लड़का भेंड़ें चराया करता था। एक दिन वह जंगल में भेंड़ें चरा रहा था। इतने में एक बड़ा-सा राक्षस आया। उसे देखकर भेंड़ें इधर-उधर भाग गईं। कुछ भेंड़ों को राक्षस उठा ले गया। बाकी भेंड़ों को ढूँढ़ने में लड़के का दिन भर बीत गया। शाम को वह एक महल के सामने जा निकला। उस महल में वही राक्षस रहता था। राक्षस ने उसे देखते ही मुस्कुराकर कहा—मैंने तुम्हारी सब भेंड़ें खालीं। अब तुमको भी खा लूँगा।

देखो, मैं कितना मजबूत हूँ ?



राक्षस ने कहा—मैं तुमको भी खा लूँगा

लडके ने कहा—क्या तुम पत्थर में से आग निकाल सकते हो ?

राक्षस ने कहा—नहीं ।

लडके ने जेब में से एक दियासलाई निकाली और पत्थर पर घिसकर उसे जला दिया और कहा—देखो, मैं पत्थर में से आग निकाल सकता हूँ ।

राक्षस को बडा अचरज हुआ । उसने कहा—जगल में आग की हर वक्त जरूरत रहती है । पत्थर में से आग निकालने की तरकीब मुझे दो ।

लडके ने कहा—अच्छा, बता दूँगा।

लडका रात भर महल में रहा। सबेरे राक्षस ने कहा—चलो, बरगद का एक पेड उखाड लावें।

लडके ने कहा—चलो।

राक्षस ने बरगद का पेड झुका लिया और कहा—तुम इसे पकड़ रक्खो, मैं जड उखाडता हूँ।

लडके ने पेड की एक डाल पकड ली। जैसे ही राक्षस ने उसे छोडा, वह ऊपर को उछली। साथ ही लडका भी आकाश में दूर तक उछल गया।

लडके ने कहा—अहा! यह तो बडा अच्छा खेल है।

उसने राक्षस से कहा—क्या तुम मेरी तरह इतना ऊँचा उछल सकते हो?

राक्षस ने कहा—नहीं।

राक्षस ने पेड उखाड लिया। लडके ने कहा—जड की तरफ का हिस्सा भारी है। मैं उसे उठाऊँगा।

राक्षस ने पेड का तना कंधे पर रक्खा। लडका चुपके से कूदकर पेड के खोखले में जा बैठा। भारी पेड उठाये हुए राक्षस जब अपने महल के दरवाजे पर पहुँचा, तब लडका कूदकर जमीन पर खडा हो गया।

राक्षस ने पेड को जमीन पर पटक दिया। वह थक गया



लड़का खोखले में जा बैठा

था और हॉफ रहा था। लडके ने कहा—तुम तो थक गये हो। मैं तो नहीं थका।

राक्षस को बडा ताज्जुब हुआ कि लडका नहीं थका।

राक्षस ने मन में सोचा—अगर मैं इस लडके को नहीं मार डालूँगा तो यह मेरा मालिक बन बैठेगा।

पर लड़का गाफिल नहीं था।

राक्षस के घर में चमड़े की एक मसक रक्खी हुई थी। राक्षस की आँख बचाकर लड़के ने उसे पानी से भर लिया और अपने सोने के बिछौने पर चादर से ढककर रख दिया। वह दरवाजे की आड़ में चुपचाप जाकर बैठ गया। आधी रात होने पर राक्षस उठा और धीरे-धीरे चलकर लड़के के बिछौने के पास पहुँचा। उसने समझा, लड़का सो रहा है। उसने बड़े जोर से एक घूसा मारा। मसक फूट गई और पानी उछलकर राक्षस के मुँह पर जा गिरा। राक्षस ने कहा—आह, खून ही खून भरा था।

सवेरा होते ही लड़का मुसकुराता हुआ राक्षस के सामने पहुँचा और कहने लगा—रात को मैं ने सपना देखा कि एक मक्खी ने मुझे काट लिया।

राक्षस उसकी ओर डर भरी आँखों से देखने लगा।

दोनों साथ-साथ खाने बैठे। लड़के ने गले के पास एक थैली बाँध रक्खी थी। वह खाता भी जाता था और राक्षस की आँख बचाकर थैली में भी भरता जाता था। देखते ही देखते थैली भर गई और उसका पेट मोटा दिखाई पड़ने लगा। राक्षस बहुत डरा। लड़के ने कहा—क्या तुम इतना खा सकते हो ?

राक्षस ने कहा—नहीं। तुम इतना ज्यादा कैसे खा लेते हो ?

लडके ने कहा—मै पेट की थैली को चीर कर खाने को बाहर निकाल देता हूँ और फिर खाने लगता हूँ।

यह कहकर लडके ने चाकू निकाला और अपने कुरते के अदर हाथ डालकर थैली को चीर दिया। उसके अदर का खाना बाहर आ गया। यह देखकर राक्षस बहुत खुश हुआ। उसने कहा—वाह, वा, यह तो बडा अच्छा खेल है।

उसने भी एक बडा सा चाकू हाथ में लिया और पेट में भोंक लिया। पेट फटते ही वह धडाम से गिर पडा और मर गया। लडका उस महल का मालिक हो गया और उसमे उसने बडा खजाना पाया।

दुष्टों के साथ हमेशा चतुराई से रहना चाहिये।

प्रा ण दे

सिंह और लकडहारे की कहानी

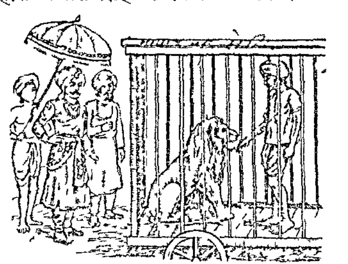
एक लकडहारा जङ्गल में, लकडी तोड़ने गया। वहाँ किसी झाडी की आड में सिह बैठा था। लकडहारे ने उसको नहीं देखा और वह सीधा उसके सामने चला गया।

सिह को देखते ही लकडहारा चिल्लाकर गिर पडा और बेहोश हो गया। कुछ देर में जब उसको होश हुआ, तब उसने आँखें खोलीं। सिह को उसकी जगह पर चुप-चाप बैठा देखकर उसे बड़ा अचम्भा हुआ। सिह अपना पजा बारबार उठाता और रखता था। लकडहारे ने देखा कि उसके पजे में काँटा चुभा हुआ है। वह जी कडा करके उठा और सिह के पास जाकर उसने उसके पजे में से काँटा निकाल लिया। काँटा निकल जाने पर सिह वहाँ से उठा और जङ्गल में चला गया। लकडहारा लकडी लेकर अपने घर

चला आया।

कुछ दिनों के पीछे राजा के शिकारियों ने उस सिंह को पकड़कर पिंजड़े मे बन्द कर दिया। उसके थोड़े दिनों के पीछे उस लकड़हारे को राजा ने किसी बुरे काम के कारण मार डालने की आज्ञा दी। राजा ने कहा कि लकड़हारे को सिंह के पिंजड़े में डाल दो। सिंह का पेट भी भर जायगा और हमारी आज्ञा भी पूरी हो जायगी।

लकड़हारा बेचारा सिंह के पिंजड़े में ढकेल दिया गया।



सिंह लकड़हारे का हाथ चाटने लगा

राजा और उसके सब दरबारी यह तमाशा देखने के लिए पिंजड़े के पास खड़े हुए। पहले तो सिंह बड़े जोर से गरज कर लकड़हारे पर झपटा। परन्तु पास आने पर जब उसने उसे पह-

चान लिया, तब वह लकड़हारे का हाथ चाटने लगा।

राजा और उसके सब दरबारी यह देखकर बड़े चकित हुए। राजा ने लकड़हार को पिंजड़े से बाहर निकलवा लिया और पूछा—सिंह ने तुमको क्यों नहीं खाया?

लकड़हारे ने अपनी और सिंह की कहानी राजा को सुनाई राजा बहुत खुश हुआ, उसने लकड़हारे का अपराध क्षमा कर दिया।

भलाई करने वाले को कभी न कभी उसका बदला जरूर मिलता है। जैसे सिंह के पंजे में काँटा निकालने के बदले में लकड़हारे की जान बच गई।

उडनखटोले की कहानी

एक लडके को हवाई जहाज में उडने का बडा शौक था। रात दिन वह इसी फिराक में रहा करता था। एक दिन उसने यह सपना देखा—

लडका अपने एक साथी के साथ पढने जा रहा था। राह में उसे एक गरीब आदमी मिला, जो चिथडे लपेटे हुए और भूख से परेशान चला जा रहा था। कुछ शरारती लडके उसे हैरान कर रहे थे। कोई उसे ढेले मार रहा था और कोई उसे चिकोटी काटकर भाग रहा था। गरीब आदमी ने उस लडके से कुछ खाने को माँगा। लडके को उस पर दया आई। उसने और उसके साथी ने उसे कुछ पैसे दिये और शरारती लडकों को भी डाट-डपट कर भगा दिया।

लडका अपने साथी के साथ आगे बढ़ा। इतने ही में पीछे एक हलका-सा धडाका हुआ। दोनों ने पीछे मुडकर देखा तो गरीब आदमी का कहीं पता न था- उसके बदले शिवजी दिखाई पडे। दोनों लडके लोट पडे। एक ने कहा—ओहो, आप तो शिवजी हैं!

शिवजी ने कहा—हाँ, मैं शिवजी हूँ। यह देखने निकला था कि देखूँ, कहीं अच्छे लडके भी हैं या नहीं? तुम दोनो बडे अच्छे लडके हो। गरीबों पर दया रखते हो और दुष्ट को दबाने की हिम्मत भी रखते हो। तुम कुछ माँगो। मैं मः कुछ दे सकता हूँ।

लडके ने कहा—आप मुझे एक उड़नखटोला दीजिये।

उसके साथी की ओर शिवजी ने देखा, तब उसने कहा—उडनखटोले में दो सीटें हों, जिससे हम दोनों साथ बैठक उडा करें।

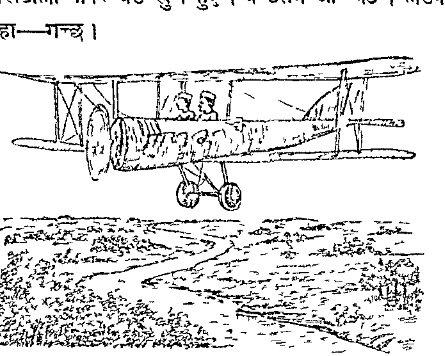
शिवजी ने कहा—आँखें बन्द करो।

दोनों लडकों ने आँखें बन्द कर लीं। क्षण भर बाद शिवज ने कहा—आँखें खोलो।

दोनों लडकों ने आँखें खोल दीं। उन्होंने देखा कि उनवे सामने एक छोटा-सा दो सीटों वाला उडनखटोला खड़ा है

शिवजी ने कहा—तुम दोनों अच्छे लड़के इस पर बैठकर सैर किया करो। जब चलाना हो, तब कहना 'गच्छ'; जल्द चलाना हो तब कहना 'शीघ्र गच्छ'; ठहरना हो तब कहना 'तिष्ठ'। लेकिन झूठ बोलोगे, तब यह नहीं चलेगा और तुम्हारे पास रहेगा भी नहीं।

यह कहकर शिवजी अन्तर्धान हो गये। दोनों लड़के उड़नखटोला पाकर बड़े खुश हुए। वे उसमें जा बैठे। लड़के ने कहा—गच्छ।



दोनों लड़के आकाश की सैर करने लगे

वह उड़ चला। वे दोनों पाठशाला के पास जाकर बोले—

तिष्ठ। उडनखटोला ठहर गया। वे उतर पडे।

दोनों लडके रोज़ आकाश की सैर करने लगे। कभी पूरब जाते, कभी पश्चिम, कभी उत्तर, कभी दक्षिण। छुट्टियों में तो वे सैकडों मील की सैर किया करते थे।

एक दिन सवेरे खा-पीकर दोनों लडके उडनखटोले में बैठ गये। उडते-उडते वे बहुत दूर निकल गये। कितने ही शहर, गाँव, झोपडे, कुएँ, तालाब, जगल, मैदान पहाड और नदी-नाले पार करते हुए वे पहाडियों से घिरे हुए एक लम्बे-चौडे मैदान के ऊपर पहुँचे। लडकों ने उस सुनसान मैदान में एक झाडी के पास एक आदमी देखा जो यकायक गायब हो गया। उन्हे यह जानने की बडी इच्छा हुई कि वह आदमी कहाँ गया। उन्होंने उडनखटोले को कहा—तिष्ठ।

उडनखटोला उतर पडा। दोनों लडके उडनखटोले से उतरकर झाडी के पास पहुँचे। वहाँ उन्होंने देखा कि जमीन पर पत्थर की एक पटिया पडी हुई है। दोनों ने जोर लगा कर उसे हटाया तो नीचे उतरने की सीढियाँ दिखाई पडीं। दोनों उतरने लगे। थोडी दूर जाने पर उनको किसी के रोने की आवाज़ सुनाई दी।

सीढियाँ खतम होने पर उनको एक कोठरी मिली। कोठरी

मे बडा अँधेरा था। साथी ने टार्च लैम्प निकालकर रोशनी की। रोशनी में उनको कोठरी का दूसरा दरवाजा दिखाई पडा। वह खुला हुआ था। वे दोनों उसमे घुसे। अब उनको एक लम्बी सुरग में चलना पडा। जैसे-जैसे वे बढ़ते जाते थे रोने और चिल्लाने की आवाज नजदीक आती जाती थी। सुरग खतम होने पर उनको एक और दरवाज़ा मिला। धक्का देने से वह खुला। दोनों अदर घुसे। उन्हें फिर नीचे जाती हुई सीढ़ियाँ मिलीं। दोनों बहादुर लडके नीचे उतर गये। आगे उन्हें फिर एक दरवाज़ा मिला। उसके किवाडे जडे हुए थे। वहाँ टार्च लैम्प बुझा ली गई। एक दरार में से झाँककर लडके ने देखा तो सामने एक कोठरी थी, जिसमे एक दिया टिमटिमा रहा था। एक खभे से एक लडका बँधा था। एक हट्टाकट्टा आदमी हाथ में तलवार लिये उसके सामने खडा था। कुछ दूर पर एक आदमी और खडा था। तलवारवाला आदमी लडके को धमका रहा था कि अपने बाप का गडा हुआ धन बता, नहीं तो तलवार से तेरी बोटी-बोटी काट डालूँगा।

खभे से बँधा हुआ लडका सिसक-सिसककर और कभी चिल्ला-चिल्लाकर रो रहा था। बदमाश की बात सुनकर लडका बहुत डरा और कहने लगा—हे भगवान मुझे बचाओ।

बदमाश ने तलवार ऊँची करके कहा—बुला, तेरा भगवान कहाँ है ?

तलवार उसकी गरदन पर गिरने ही वाली थी कि उडन-खटोले वाले लडके ने किवाडे मे धक्का दिया। किवाडा खुल गया। उसके साथी ने टार्च लैम्प जला लिया और लडके ने जेब से नकली पिस्तोल निकालकर फायर कर दिया। दोनों बदमाश यह घटना देखकर हक्के-बक्के हो गये और थर-थर काँपने लगे। बदमाश के हाथ से तलवार गिर पडी। उडन खटोलेवाले लडके ने तलवार उठा ली और खमे से बँधे हुए लडके की रस्सी काट दी। फिर उसने दोनों बदमाशों से कहा—चुपचाप बैठ जाओ, नहीं तो अभी मार डाले जाओगे।

दोनों बदमाश चुपचाप बैठ गये। तीनों लडकों ने रस्सी से दोनों बदमाशों के हाथ पीठ की ओर ले जाकर कसकर बाँध दिये। फिर उनको आगे करके वे सीढ़ियाँ, सुरंग और कोठरियाँ पार करके ऊपर आ गये।

लडके ने दोनों बदमाशों को उडनखटोले से बाँध दिया और फिर तीनों लडके उसमें जा बैठे। 'गच्छ' कहते ही वह उडा और लडके के इशारे के अनुसार राजा के सामने जाकर

ज़मीन पर उतरा ।

लड़के और उसके साथी ने राजा के सामने अपनी यात्रा का और बदमाशों के पकड़ने का पूरा हाल कहा । राजा बहुत ही प्रसन्न हुआ । उसने लड़कों को बहुत सी चीजें इनाम दीं और दोनों बदमाशों को कैद कर दिया ।

लड़कों ने जोश मे आकर अपने सम्बध मे कुछ ऐसी बातें भी कह दी थीं जो सच नहीं थीं । इससे जब वे उड़न-खटोले पर आकर बैठे, तब वह उड़ा नहीं । वे जैसे ही उतरे और न उड़ने का कारण ढूँढ़ने लगे, वैसे ही वह उड़कर गायब हो गया ।

लड़के पछताने लगे कि उन्होंने जितना सच था, उतना ही क्यों न कहा ।

इतने में नींद खुल गई ।

राजा और मकडी की कहानी

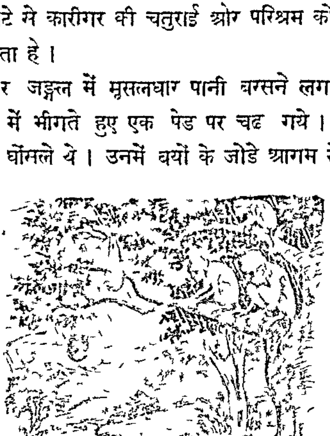
एक राजा बडा बहादुर था। परन्तु उसके कई शत्रु भी बडे वीर और लडाके थे। उन्होंने मिलकर राजा का राजपाट छीन लेना चाहा। राजा बडी वीरता के साथ उनसे लडा। परन्तु अन्त मे वह हारकर भाग गया। उसके शत्रुओं ने उसके राज्य पर अधिकार कर लिया।

कुछ दिन के पीछे राजा ने फिर सेना इकट्ठी की और उन पर चढाई की। परन्तु फिर भी वह हार गया। इसी प्रकार राजा आठ बार हारकर वहाँ से भागा और एक पहाड की गुफा जा छिपा। राजपाट छिन जाने से और आठ बार हार जाने वह इतना उदास हुआ कि उसने अपने पेट में कटार मा मर जाना चाहा।

वह कटार हाथ मे लेकर मारना ही चाहता था कि

की मात्रा अंडे देती है। बया कभी-कभी जुगनू को पकड़कर घोंसले के भीतर रख लेता है। उनसे वह प्रकाश का काम लेता है। इस छोटे से कारीगर की चतुराई और परिश्रम को देखकर आश्चर्य होता है।

एक बार जङ्गल में मूसलधार पानी बरसने लगा। कुछ बन्दर पानी में भीगते हुए एक पेड़ पर चढ़ गये। उस पेड़ पर बयों के घोंसले थे। उनमें बयों के जोड़े आराम से बैठकर



बन्दर डाली से चिपटकर कूँ, कूँ करने लगा

आपस में बातचीत करते थे। बन्दर भीगे हुए इस डाली से उस

डाली पर कूदते फिरते थे। उन्हें कहीं आराम से बैठने की जगह न मिलती थी। इतने में ओले गिरने लगे। तब बन्दर डाली से चिपटकर कूँ, कूँ करने लगे।

उनकी ऐसी दुर्दशा देखकर एक बये ने कहा—अरे बन्दरो! ईश्वर ने तुम्हें मनुष्य के जैसा शरीर दिया है, तुम अपने लिये घर क्यों नहीं बना लेते? जिसमें सुख से रह सको। मुझे देखो मैं एक छोटा सा पक्षी हूँ। पर मैंने अपने रहने के लिये कैसा सुन्दर घर बना लिया है। इस समय तुम कितने कष्ट भोग रहे



बन्दर ने घोंसले को पकड़कर नोच लिया

हो और मैं आराम से बैठा हूँ।

बन्दरों ने समझा—बया मेरी हँसी कर रहा है। पानी बरसना बन्द होते ही उन्होंने घोंसले पकडकर नोच लिये। बयों के जोडे उडकर दूसरी डाली पर जा बैठे। बयों ने कहा—ऐ मूर्खो, मैने तो तुम्हें अच्छी बात कही थी, तुमने उसका ऐसा बदला लिया।

उस दिन से बये काँटेदार पेडों पर घोंसले बनाने लगे, जिसपर बन्दर न पहुँच सकें।

मूर्ख को अच्छी बातें भी बुरी लगती है।

तीन सुनहले बालों की कहानी

एक गरीब आदमी था। उसके एक लडका पैदा हुआ। वह बडी अच्छी सायत में पैदा हुआ था। एक पडित ने कहा—चौदह वर्ष की उम्र में इसका व्याह राजा की लडकी से होगा।

लड़के के पैदा होने के दो ही चार दिन बाद उस गाँव
राजा उधर से जा रहा था। उसने गाँव वालों से पूछा—कोई
नई खबर है ?

एक गाँव वाले ने कहा—हाँ, एक गरीब आदमी के
लड़का पैदा हुआ है। एक पंडित ने उसका भाग्य बताया है
कि वह चौदह वर्ष की उम्र में राजा की लड़की से ब्याह
करेगा।

राजा को यह बात अच्छी न लगी। वह उस गरीब
के घर गया और उसने कहा—तुम अपना लड़का मेरे हाथ
बेच दो।

लड़के के गरीब माँ-बाप ने कहा—नहीं।

राजा ने कहा—एक हजार मोहर दूँगा।

इतनी बड़ी रकम का नाम सुनते ही गरीब के
भर आया। उसने कहा—यह लड़का
नुकसान नहीं पहुँचा सकता।

उसने लड़का बेंच । राजा लड़
बन्द करके ले चला। गहरे नाले
उसने सदूक को नाले दिया
सदूक धारा में बह चल धर



संदूक धारा में बह चला

थी। गरीब बच्चे का हाल देखकर उसे बडी दया आई। वह उतर पडी और संदूक के साथ बच्चे की निगरानी करती हुई चलने लगी। एक कोस जाने पर संदूक किनारे लगा। पास ही एक किसान का घर था। वह नाले में नहाने आया था। संदूक को देखकर उसे अचरज हुआ। वह उसे अपने घर उठा लाया। खोलकर देखा तो एक सुन्दर बच्चा उसके भीतर सो रहा था। किसान के कोई लडका नहीं था। उसकी स्त्री उस बच्चे को पाकर बड़ी खुश हुई। उसने उसे [illegible] लिया

लडके के पैदा होने के दो ही चार दिन बाद उस गाँव का राजा उधर से जा रहा था। उसने गाँव वालों से पूछा नई खबर है ?

एक गाँव वाले ने कहा—हाँ, एक गरीब आदमी के घर लड़का पैदा हुआ है। एक पडित ने उसका भाग्य बताया है कि वह चौदह वर्ष की उम्र में राजा की लडकी से व्याह करेगा।

राजा को यह बात अच्छी न लगी। वह उस गरीब के घर गया और उसने कहा—तुम अपना लडका मेरे हाथ बेंच दो।

लडके के गरीब माँ-बाप ने कहा—नहीं।

राजा ने कहा—एक हजार मोहर दूँगा।

इतनी बडी रकम का नाम सुनते ही गरीब के मुँह में पानी भर आया। उसने कहा—यह लडका भाग्यवान् है। इसे कोई नुकसान नहा पहुँचा सकता।

उसने लडका बेंच दिया। राजा लडके को एक सदूक मे बन्द करके ले चला। जब वह एक गहरे नाले के किनारे पहुचा, उसने सदूक को नाले की धारा में फेंक दिया।

सदूक धारा मे बह चला। एक परी उधर से उडी जा रही

बाल नोचा। जिनों का राजा बड़े जोर से चौंका और फिर बोला—क्या करती है ?

बुढ़िया ने उसके सिर पर थपकी देते हुए कहा—गुस्से मत हो। मैंने नींद में तुम्हारे बाल नोचे हैं। मैंने स्वप्न में देखा कि एक शहर है, जहाँ एक सेब का पेड़ है, जिसमें सुनहले फल लगा करते थे। अब उसमें एक पत्ता भी नहीं लगता। क्या कारण है ?

जिनों के राजा ने सोते-सोते कहा—उसकी जड़ में एक चूहे ने बिल बनाया है।

वह फिर सो गया। उसकी नाक बजने लगी। बुढ़िया ने तीसरा बाल खींचा। इस बार जिनों का राजा गुस्से के मारे उठ खड़ा हुआ और दादी को धमकाने लगा। दादी ने पुचकार कर उसे शांत किया और कहा—यह बड़ा अजीब स्वप्न है। मैं देख रही थी कि एक नाव वाला बहुत दिनों से एक झील में नाव चला रहा है। उसे छुटकारा ही नहीं मिलता।

जिनों के राजा ने कहा—गँवार कहीं का। वह अपना पतवार जिसको दे देगा, वही खेने लगेगा। उसे छुट्टी मिल जायगी।

यह कहकर वह फिर सो गया। बुढ़िया धीरे से उठी।

और दूध पिलाया। दूध पीकर लडका मुसकुराने लगा। इससे किसान के आनन्द का ठिकाना न रहा।

तेरहवें वर्ष राजा उस गाँव में फिर दौरा करने आया। उसने उस लडके को देखा। लडका बड़ा सुन्दर, होनहार, बहादुर और नेक देख पडा। राजा ने पूछा—यह किसका लडका है।

किसान ने राजा को प्रणाम किया और कहा—तेरह वर्ष हुए, यह लडका मुझे एक सदूक के अन्दर नाले में बहता हुआ मिला था।

राजा समझ गया कि यह वही लडका है। उसने कहा—बडा अच्छा लडका है। मैं रानी के पास इस लडके के हाथ एक चिट्ठी भेजना चाहता हूँ। क्या तुम इसे जाने दोगे ?

किसान ने कहा—जैसी महाराज की इच्छा हो।

राजा ने लडके को रानी के नाम एक चिट्ठी दी। उसमें उसने लिखा था—

चिट्ठी पाते ही इस लडके को मरवा डालना और जमीन में गडवा देना। देरी नहीं करना। मेरे आने से पहले ही यह काम हो जाय।

लडका चिट्ठी लेकर चला। वह रास्ता भूल गया और एक घने जगल में जा निकला। शाम होते-होते वह एक पुराने

बाल नोचा। जिनों का राजा बडे जोर से चौंका और
कर बोला—क्या करती हे ?

बुढ़िया ने उसके सिर पर थपकी देते हुए कहा—गुस्से मत
मैंने नींद में तुम्हारे बाल नोचे है। मैंने स्वप्न मे देखा
एक शहर है, जहाॅ एक सेब का पेड है, जिसमें सुनहले
लगा करते थे। अब उसमें एक पत्ता भी नहीं लगता।
कारण है ?

जिनों के राजा ने सोते-सोते कहा—उसकी जड में एक
ने बिल बनाया है।

वह फिर सो गया। उसकी नाक बजने लगी। बुढ़िया
तीसरा बाल खींचा। इस बार जिनों का राजा गुस्से के मारे
खड़ा हुआ और दादी को धमकाने लगा। दादी ने पुच-
कर उसे शात किया और कहा—यह बड़ा अजीब स्वप्न है।
देख रही थी कि एक नाव वाला बहुत दिनों से एक झील
नाव चला रहा है। उसे छुटकारा ही नहीं मिलता।

जिनों के राजा ने कहा—गॅवार कहीं का। वह अपना पत-
र जिसको दे देगा, वही खेने लगेगा। उसे छुट्टी मिल
जायगी।

यह कहकर वह फिर सो गया। बुढिया धीरे से उठी।

उसने दूसरा मन्त्र पढ़कर चींटी पर पानी छिड़का। लड़ ... । इससे
खड़ा हुआ। बुढ़िया ने तीनों सुनहले बाल उसे देकर क...
अपने सवालों के जवाब तुम पा चुके न ? ... उसने

लड़के ने खूब खुश होकर कहा—हाँ। ... हादुर

बुढ़िया का पैर छूकर उसने विदा ली। ... है।

सबेरा होते-होते वह झील के किनारे पहुँचा। ... वर्ष
मल्लाह ने उससे पूछा—मेरे प्रश्न का जवाब दो। ... हता

लड़के ने कहा—चलो, उस पार देंगे।

पार होकर लड़का झील के कगार पर चढ़ गया और ...
से कहने लगा—तुम अपना पतवार जिसके हाथ पर रख दोगे,
वही खेने लगेगा और तुम दूर भागकर छुटकारा पा जाओगे।

यह कहकर लड़का भाग निकला, जिससे बुड्ढा मल्लाह कहीं उसके हाथ पर पतवार न रख दे।

चलते-चलते वह सेब वाले शहर में पहुँचा। शहरवालों से उसने कहा—सेब की जड़ में चूहे ने बिल बना रक्खा है। उसे मार डालो तो तुम्हारा सेब फिर फूलने फलने लगे।

शहरवालों ने उसके सामने बिल तलाश करके चूहे को निकालकर मार डाला।

आगे जाने पर उसे फौवारेवाला शहर मिला। उसने पहरे...

मकान के सामने जा निकला। उस मकान में एक बुढ़िया के सिवा और कोई नहीं था। बुढ़िया ने कहा—तुम कौन हो? और क्यों यहाँ आये?

लड़के ने कहा—मैं रानी के पास राजा की चिट्ठी ले जा रहा हूँ। रास्ता भूल गया हूँ। और अब इतना थक गया हूँ कि एक कदम भी नहीं चल सकता। आज की रात तुम मुझे सोने भर के लिये जगह दे दो।

बुढ़िया ने कहा—बेटा! यह तो डाकुओं का अड्डा है। अभी डाकू आते होंगे। तुम भाग जाओ।

पर लड़का इतना थक गया था कि वह खड़ा न रह सका और चिट्ठी ताक पर रखकर लेट गया और गहरी नींद में सो गया।

कुछ रात बीतने पर डाकुओं का सरदार आया। बुढ़िया ने उसे लड़के का सब हाल सुनाया।

सरदार ने ताक पर से चिट्ठी उठा ली। उसे सँभाल कर खोला और पढ़ा। फिर लड़के को गौर से देखकर कहा—हा, यह सुन्दर और नेक लड़का रानी के पास पहुँचते ही मार डाला जायगा।

सरदार ने उस चिट्ठी को फाड़कर फेंक दिया। उसने वैसे

ी मिलते-जुलते अक्षरों में एक दूसरी चिट्ठी लिखी और राजा का हस्ताक्षर करके उसी लिफाफे मे बंद करके ताक पर रख दिया। उसने चिट्ठी में यह लिखा—

चिट्ठी देखते ही इस सुन्दर नौजवान के साथ राजकुमारी का ब्याह कर देना। देरी नहीं करना। मेरे आने से पहले ही यह काम हो जाय।

सवेरा होने पर लड़का जागा। उसने बुढ़िया को धन्यवाद दिया और चिट्ठी लेकर वह रानी के पास पहुँचा।

रानी ने चिट्ठी पाते ही राजकुमारी के ब्याह की तैयारी कर दी। लड़का बड़े सुख से राजमहल में ठहरा दिया गया।

राजा को चैन नहीं पड़ी। उसने सोचा—चिट्ठी कहीं दूसरे के हाथ न पड़ जाय। लड़के के पहुँचने के थोड़ी देर बाद वह भी आ पहुँचा। चिट्ठी पढ़कर और ब्याह की तैयारी देखकर वह बहुत बिगड़ा और कहने लगा—मेरी लड़की के साथ वही शादी कर सकता है जो उस भयानक गुफा मे, जो यहाँ से सौ कोस दूर है, जाकर जिनों के राजा के सिर के तीन सुनहले बाल ले आवे।

लड़के ने छाती पर हाथ रखकर कहा—मैं लाऊँगा।

वह राजा और रानी को प्रणाम करके और राजकुमारी



लड़के ने छाती पर हाथ रखकर कहा—मैं लाऊँगा

विदा लेकर निकल पड़ा।

कई दिनों के बाद वह एक शहर के दरवाजे पर पहुँचा। पहरे वाले ने उसे रोककर कहा—तुम कौन हो? और कहाँ जाते हो?

लड़के ने कहा—मैं मुसाफिर हूँ और जिनों के राजा की गुफा में जा रहा हूँ।

पहरे वाले ने पूछा—तुम क्या काम करते हो ? और क्या क्या हुनर जानते हो ?

लड़के ने कहा—मैं सब कुछ जानता हूँ।

पहरे वाले ने कहा—अहा ! तुम्हारे ही जैसे होशियार आदमी की तलाश थी। अच्छा, तुम बताओ कि इस शहर के बीच में जो फौवारा है, वह कुछ दिनों से बंद क्यों हो गया है ?

लड़के ने कहा—अच्छा, लौटकर बताऊँगा।

वह आगे बढ़ा और कई दिनों बाद दूसरे शहर में पहुँचा। उस शहर वालों ने उससे पूछा—तुम क्या जानते हो ?

लड़के ने कहा—सब कुछ।

शहर वालों ने पूछा—अच्छा, बताओ, हमारे शहर में सेब का एक पेड़ था, जिसमें सुनहले सेब लगते थे। कुछ दिनों से उसमें एक पत्ता भी नहीं निकलता। क्यों ?

लड़के ने कहा—लौटकर बताऊँगा।

वह आगे बढ़ा। कुछ दिनों बाद वह एक बड़े झील के किनारे पहुँचा। एक बुड्ढा मल्लाह नाव खे रहा था। जैसे और लोगों ने पूछा वैसे ही वह मल्लाह भी लड़के से पूछने लगा—तुम क्या विद्या जानते हो ?

लड़के ने कहा—सब कुछ।

मल्लाह ने खुश होकर कहा—नाव खेते-खेते मैं बुड्ढा हो गया। इस झील से बाहर मैं जा ही नहीं सकता। बताओ, मुझे छुटकारा कैसे मिलेगा ?



मल्लाह ने कहा—मुझे छुटकारा कैसे मिलेगा ?

लड़के ने कहा—लौटकर बताऊँगा।

झील से पार होकर वह एक भयानक जंगल में घुसा। कुछ दूर जाने पर एक बड़े पेड़ के नीचे एक बुढ़िया बैठी मिली। बुढ़िया ने कहा—बेटा ! मैं बड़ी भूखी हूँ।

लड़के के पास एक थैला था, जिसमें कुछ रोटियाँ और किसमिस थे और पानी का एक बरतन कमर से लटक रहा था। लड़के ने कहा—मेरे पास खाने-पीने का काफी सामान है।

उसने बुढ़िया के आगे कई रोटियाँ और किसमिस रख दिये।



बुढ़िया ने कहा—बेटा ! मैं बड़ी भूखी हूँ

पत्तों का एक दोना बनाकर उसमें पानी भर दिया ।

बुढ़िया सचमुच बड़ी भूखी थी । रोटियाँ खाकर और पानी पीकर उसने एक डकार ली और कहा—बेटा ! मैं तुमसे बहुत खुश हूँ । तुम अकेले इस जंगल में कहाँ जा रहे हो ?

लड़के ने कहा—यहाँ कोई भयानक गुफा है । उसमें जिनों का राजा रहता है । मुझे उसके सिर के तीन सुनहले बालों की ज़रूरत है ।

बुढ़िया ने कहा—बेटा ! तुमने बड़ा जान-जोखों का काम

ं ह के सामने गुफा की छत पर र
दिखाई दी । मकड़ी अपने तागे के
थी। परन्तु छत के पास पहुँच जा
पड़ती थी । राजा यह तमाशा

मफलता
राज   है । वह तं
सेना   नहीं



बार ऊपर चढ़ी और आठों बार नीचे गिर पड़ी । नवीं बार वह फिर से ऊपर चढ़ने लगी और इस बार वह छत पर जा पहुँची ।

मकड़ी के उद्योग को देखकर राजा ने कहा—जब यह ए कीड़ा होकर उद्योग करने से निराश नहीं होती, तब मैं म होकर क्यों निराश होता   " फिर उद्योग करना

...नस्य होगी।

...के मन में फिर उत्साह पैदा हुआ और नवीं बार उसने ... इकट्ठी करके शत्रुओं पर चढ़ाई की। इस बार उसके शत्रु ...र गये और राजा ने उनसे अपना राजपाट छीन लिया।

बारबार उद्योग करके काम पूरा करने ही में बड़ाई है।

बया और बन्दर की कहानी

बया एक छोटा सा पक्षी है। वह अपने रहने के लिए बहुत सुन्दर घोंसला बनाता है। उसका घोंसला ऐसा दृढ़ होता है कि न उसमें बरसात का पानी घुस सकता है और न उसमें बैठने वाले पक्षी को सर्दी या धूप का कष्ट पहुँचता है। बया पक्षी अपने घोंसलों को पास-पास और वृक्ष की ऊँची डाल से लटकाते हैं। वे इकट्ठा रहना बहुत पसन्द करते हैं। घोंसले के भीतर एक बैठक और एक कोठरी होती है। कोठरी में बया

गया है। जिनों का राजा तो मेरा नाती लगता है। वह तो उसने देखते ही मारकर खा जायगा।

लडके ने कहा—दादी ! तुम क्या मेरी कुछ मदद नहीं कर सकती ?

बुढ़िया ने कहा—अच्छा, तुमने मुझे खिला-पिलाकर बहुत खुश किया है। मैं तुम्हारी मदद करूँगी।

बुढ़िया उसे लेकर गुफा में गई। गुफा बडी ही भयानक थी। लडके ने कहा—तीन सुनहले बालों के सिवा मैं यह भी जानना चाहता हूँ कि शहर का फौवारा बन्द क्यों हो गया ? सेब के पेड में अब सुनहले सेब क्यों नहीं लगते ? और झील में जो नाव चला रहा है, उसे छुटकारा कैसे मिलेगा ?

बुढ़िया ने कोई मन्त्र पढ़कर लडके पर पानी छिड़क दिया। वह चींटी हो गया। बुढ़िया ने उसे अपने आँचल में छिपा लिया और कहा—बेटा ! चुपचाप छिपे रहो। जागते रहना और अपने सवालों के जवाब सुनते जाना।

रात गहरी होती गई। कुछ देर बाद जिनों का [illegible] स राजा आया। गुफा के दरवाज़े पर [illegible]

कहने लगा—आदमी की [illegible] सफ-

वह इधर-उधर [illegible]

उसकी दादी ने कहा—तुम क्यों आज इतना गड़बड कर रहे हो ? मैंने अभी सब चीज़ों को क़ायदे से रक्खा था।

जिनों का राजा दादी की गोद में सिर रखकर सो गया। बुढ़िया ने उसका एक बाल पकडकर नोचा। जिन चौंक



बुढ़िया ने उसका एक बाल पकड़कर नोचा

उठा। बुढ़िया ने कहा—कुछ नहीं, मैं एक सपना देख रही थी। एक शहर में एक फौवारा है। वह सूख क्यों गया है ?

जिनों के राजा ने नींद में बडबडाते हुए कहा—उसकी जड में एक वडा सा मेढक बैठा है, वह पानी को रोके हुए है।

थोडी देर बाद जब वह फिर ख़ुर्राटे लेने लगा, बुढ़िया ने

वाले ने कहा—फौवारे की जड में एक बडा मेढक बैठा है। इसी से छेद बन्द हो गया है और पानी निकलना रुक गया है।

पहरेवाले ने शहरवालों को खबर दी। शहरवालों ने फौवारे की जड खुदवाकर देखा तो सचमुच एक बडा मेढक मिला। वह निकालकर मार डाला गया और फौवारा चलने लगा। शहरवालों ने खुश होकर लडके को बहुत धन दिया।

लड़का तीन बाल लेकर राजा के पास पहुँचा। राजकुमारी उसे देखकर और उसकी यात्रा का हाल सुनकर बडी खुश हुई। राजा ने अपने वादे के अनुसार राजकुमारी का विवाह उस लडके के साथ कर दिया। दोनों सुख से रहने लगे।

राजा को भी सजा मिल गई। वह एक दिन सैर-सपाटे के लिये निकला और कई दिनों तक घूमते-घामते उसी झील के किनारे जा पहुँचा जहाँ बुड्ढा मल्लाह छुटकारा पाने के लिये किसी नये मुसाफिर की राह देख रहा था। राजा उस पार जाने के लिये जैसे ही नाव पर बैठा, मल्लाह उसके हाथों पर पतवार फेंककर झील में कूद पडा और तैर कर निकल भागा। तब से राजा नाव खेने लगा।

कठिनाइयों का मुकाबला हिम्मत के साथ करने से सफलता मिलती है।

सेवा की कहानी

कान्ति और किशोरी दो बहनें बडे सबेरे उठकर बाग मे टहलने गई थीं। जब वे लौटकर आईं, तब उनकी माँ ने उनसे पूछा—आज तुम दोनों ने क्या किया ?

किशोरी ने कहा—माँ ! मैं तो घर से निकल कर गली में होती हुई बाग में चली गई। वहाँ कुछ देर तक फूलों को देखती रही। बडे सुन्दर सुन्दर फूल खिल रहे हैं। फिर हरी घास पर बैठ गई। वहाँ से चलकर पीपल के पत्ते तोडकर पपीहरियाँ बनाती रही। वहाँ से तालाब पर आई। तालाब का जल बडा स्वच्छ है, जैसे दर्पण। उसमें मछलियाँ कलोल कर रही थीं। उनके खेल देखकर मुझे बडा आनन्द आया। कुछ देर तक तालाब की शोभा देखकर मैं घर चली आई।

माँ ने पूछा—तुमने किसी का कुछ भला भी किया ?

किशोरी ने कहा—मैं थोडी ही दूर तो गई थी। न कोई भूखा मिला; न कोई रोगी मिला; न मैं किसी औषधालय में गई; फिर किसका भला करती ?

माँ ने कान्ति से पूछा—बेटी ! तुम अपने भ्रमण का हाल सुनाओ। तुमने किसी को कुछ लाभ पहुँचाया या नहीं ?

कान्ति ने कहा—माँ ! घर से निकलकर किशोरी आगे आगे जा रही थी और मैं पीछे पीछे। मैंने देखा कि एक गधा धरती पर पडा है। कौवे चोंच मार मार कर उसे दु:ख दे रहे हैं। उसकी पीठ से रक्त बह रहा है। मैंने कौवों को उडा दिया और गधे के घावों पर मिट्टी डाल दी।

वहाँ से आगे बढ़ी, तो बाग में देखा कि नाली एक जगह से टूट गई है और जल व्यर्थ बहा जा रहा है। मैंने मिट्टी से नाली को बाँधना चाहा। पर मिट्टी थोडी थी। पानी उसे बहा ले जाता था। मैंने माली को पुकारा। उसने खुरपे से नाली ठीक कर दी।

वहाँ से मैं बाग के बडे चक्कर में गई। वहाँ बडे सुन्दर फूल खिले हैं। उनकी महक से वहाँ की हवा सुगन्धित हो रही है। मैं एक बेंच पर बैठ गई। सा... के

ओर थी । उस पर पक्षियों ने बीट करके उसे बिगाड दिया था। मैंने पत्तों से पोंछ कर उसे बैठने योग्य बना दिया ।

वहाँ से मैं पीपल के नीचे आई । किशोरी पपीहरियों के लिये पीपल के पत्ते झाड रही थी । मैंने इसे रोका कि जितने पत्तों की आवश्यकता हो, उतने ले लो । बाकी पत्तों को झाडकर छाया क्यों बिगाड रही हो ?

वहाँ से मै तालाब के किनारे आई । एक बगुला दो मछलियाँ लिये उडा जा रहा था । एक मछली उसके मुँह से छूटकर धरती पर गिर गई थी और पानी बिना तडप रही थी । मैंने उसे उठाकर तालाब मे डाल दिया ।

घर लौटते समय मुझे सडक पर एक मरा हुआ चूहा पडा मिला । मैंने उसे लकडी से उठाकर खेत मे फेंक दिया और उस पर मिट्टी डाल दी ।

रास्ते में एक लडका खडा रो रहा था । उसकी आँखें उठ आई थीं । वह शौच के लिये घर से बाहर आया था । पर धूप निकल आने से उसकी आँखों में दर्द होने लगा । मैंने नीम की एक टहनी तोडकर उसे दी और समझा दिया कि आँखों को इसकी छाया में रखकर घर चले जाओ ।

वहाँ से आगे बढी, तो गोद मे एक छोटा सा बच्चा लिये हुए

एक स्त्री मिली। उसके हाथ में एक लोटा जल और सूत था। पूछने पर मालूम हुआ कि उसके बच्चे को कई दिन से ज्वर



राह में एक रोगी सा बच्चा लिये हुए एक स्त्री मिली

आता है। उसके लिये वह टोना करने आई है। मैंने उसे समझाया कि रोग औषधि से दूर होगा न कि टोने से। मेरी बात वह मान गई और वैद्य के घर गई।

फिर मैं घर पहुँच गई।

कान्ति की बातें सुनकर माँ ने किशोरी से कहा—देखो किशोरी, तुम और कान्ति साथ-साथ गई थी। तुम यों ही घूमकर चली आई और इतने ही समय में कान्ति दूसरों की सेवा के

कितने काम कर आई। कान्ति बडी गुणवती कन्या है। मैं इसी से इसे बहुत प्यार करती हूँ।

मन में इच्छा करने से, दूसरों की सेवा करने के सैकडों काम ऐसे हैं, जिन्हें तुम चलते-फिरते सहज ही में कर सकते हो।

* * *

मीठी बोली की कहानी

एक दिन एक राजा अपने मन्त्री और सेवक को साथ लेकर सैर करने निकला। घूमते फिरते वह वन में जा पहुँचा। वहाँ उसे प्यास लगी। उसने सेवक को कहीं से जल लाने की आज्ञा दी। पास ही एक कुटी थी। उसमें एक अन्धा साधु रहता था। सेवक ने कुटी के सामने जाकर कहा—अरे अन्धे, तेरे पास जल हो तो हमें दे।

साधु ने कहा—मैं नीच को जल नहीं दूँगा। चले जाओ।

सेवक ने राजा के पास लौटकर कहा—अन्धा बडा दुष्ट है, जल नहीं देता।

राजा ने मन्त्री को जल लाने की आज्ञा दी। मन्त्री ने साधु के पास जाकर कहा—भाई अन्धे, थोडा सा जल चाहिये।

साधु ने कहा—तुम मन्त्री हो तो क्या हुआ? मैं जल नहीं दूँगा।

मन्त्री खाली हाथ लौट गया। तीसरी बार राजा स्वय कुटी के सामने गया और उसने कहा—महात्मा जी, मुझे प्यास



अरे अन्धे ! तेरे पास जल हो तो हमें दे

लगी है। कृपा करके थोडा सा जल दीजिये।

साधु ने कहा—[illegible] बैठ जाइये। मैं अभी लाता हूँ।